शोध मंथन

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चिकित्सा संगठन की भूमिका का अध्ययन

डॉ सरिता पाल*
L.I.G. 223 पटेल नगर
बुधवारिया उज्जैन (म.प्र.)

प्रस्तावना :–

''शरीर माध्यम खलुः धर्म साधनम्'' अर्थात् निश्चय ही शरीर सभी धर्मो के पालन का माध्यम है, अर्थात शरीर का अस्तित्व ही धर्म के अस्तित्व को बनाए रख सकता है। और शरीर का अस्तित्व स्वास्थ्य पर ही निर्भर करता है। इस स्वास्थ्य को बनाए रखने हेतु तथा स्वास्थ्य वर्धन हेतु जिस जिम्मेदार विभाग की स्थापना की गई है। उसे ही चिकित्सा विभाग कहते है।

संगठन का विकासः–

समय व्यतीत होने के साथ–साथ विभिन्न कारणो से सभी संगठन किंचित अल्प्रभावी या जड़ नजर आने लगते है। मुख्यतः यह परिवर्तित परिस्थितयों या पर्यावरण के अनुरूप गठन को न ढाल पाने के कारण होता है। समय के रूग्ण या अप्रभावी सिद्ध संगठन को पुनर्जीवन की आवश्यकता होती है। संगठनो में पुनर्जीवन के संचार की प्रक्रिया को ही संगठनात्मक विकास या (Organisational Development) (O.D.) कहा जाता है। इसी आधार पर संगठन को अनेक विद्वानो ने अपने अनुसार व्यक्त किया है।

वारेन बेनिस :– ने संगठनात्मक प्रभावशीलता में सुधार की प्रणाली के रूप में संगठनात्मक विकास को एक लचीला एकमार्ग स्वीकार किया था।

फ्रेंच तथा बेल ने शब्दो में :– ''संगठनात्मक विकास, संगठन की समस्याओ के समाधान करने की क्षमताओ और पर्यावरण में परिवर्तनो का सामना करने की योग्यताओं में दीर्घकालीन प्यासो का पर्याय है।''

चिकित्सा का प्रारंभिक इतिहास :–

1400 बी.सी पूर्व भारत पर आर्यन्स ने आक्रमण किया था। आर्यनस के आक्रमण के समय हमारे यहाँ आयुर्वेद एवं सिद्ध प्रणाली ही प्रचलन में थी। आयुर्वेद एवं जीवन विज्ञान ने स्वास्थय को समझने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

डसके पश्चात मनु संहिता एवं सही ढ़ग से मानव के स्वास्थ्य को किस प्रकार स्वरूप एवं सही ढ़ग से मानव स्वास्थ्य का रख रखाव किस प्रकार रखा जाए इसका ज्ञान दिया। इस सभी प्रयोगो को नियम व उपनियमो में बांटा एवं विस्तृत रूप प्रदान किया। उन्होने आरोग्य शिक्षा को प्रारम्भ किया, जिसके द्वारा उन्होने जन्म एवं शारीरिक मृत्यु के भेद को जानना प्रारम्भ किया एं जीवन का मानसिक एवं आत्मीय ज्ञान को प्रस्तुत किया।

भारत में चिकित्सा के पौराणिक इतिहास :–

''सर्वे जना सुखिनो भवन्तु'' अर्थात् सभी मनुष्य रोगो से दूर हो एवं सभी स्वास्थ्य रहे, ये कहा गया था। भारतीय दार्शनिक जीवन की मान्यता रही है कि सभी मनुष्य का सुखी रहना ही भारतीय संस्कृति का मजबूत होना माना जाता है।

वैदिक कालः– 1600 ईसा पूर्व 600 ईसा पश्चात् वैदिक काल में स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा जैनियों व बुद्ध धर्म के लोगो द्वारा तथा तक्षशिला एवं नालंदा के विश्वविद्यालयों में प्रारम्भ की गई थी। सर्वप्रथम चिकित्सा प्रणाली बुद्ध के पुत्र राहुल ने अपनी संस्कृति में आरम्भ की। जिसमें मनुष्य एवं जानवरो का इलाज किया जाता था। इस युग को चिकित्सा पद्धति का विकास काल माना जा सकता है।

650–1850 पूर्व :– इस काल को मुगलो का काल कहा जाता है। इस काल में जो औषधियाँ थी उसमें अरबी भाषा का प्रयोग किया जाता था। जिसे यूनानी प्रणाली के नाम से प्रारम्भ किया गया तथा उसे जिसे भारतीय प्रणाली से जोड़ दिया गया।

ब्रिटिश कालः– इस काल को हम पूर्णतः उन्नति काल या विकासात्मक काल कह सकते है। इस काल में अनेक ऐसी खोजे की गई जिसके चलते अनेक नए–नए उपकरणों को प्रयोग में लिया जाने लगा।

भारत में स्वास्थ्य सेवाएँ अठाहरवीं सदी के मध्य में प्रारम्भ हुई। प्रारम्भ में इनका उद्देश्य भारत में तैनात ब्रिटिश फौजो के स्वास्थ्य की सुरक्षा करना था। सही मायनो में स्वास्थ्य सेवाओं का विकास 1921 में ही प्रारम्भ हुआ।[3]

चिकित्सा सेवाओ का विकासः–

चिकित्सा विज्ञान के विकास के प्रथम चरण में बीमार हेाते व्यक्तियों की दशाओ को अंकित किया जा सकता है। अनेक विकास आधारित कार्यक्रमों व अनेक ऐसी समितियों का विकास किया गया जिसके चलते स्वास्थ्य सेवाओ का दिनो–दिन विकास संभव हो सका।

इन समितियों में सर्वप्रथम भोर समिति का स्थान आता है।

1 **भोर समितिः– 1943** में भारत सरकार ने देश में उस चयन विद्यमान स्वास्थ्य की स्थिति और स्वास्थ्य संगठनों के सर्वेक्षण तथा भावी विकास के लिए सिफारिशें करने हेतु स्वास्थ्य सर्वेक्षण एवं विकास समिति या जिसे सामान्य और भोर समिति कहा गया ।

2 **चड्ढा समिति–** चड्ढा समिति ने 1963 में सुझााव दिया कि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के उपकेन्द्र के अन्तर्गत 10,000 से अधिक जनसंख्या नहीं होना चाहिए।

3 1965 मुदालिया समितिः– मुदालिया समिति की नियुक्ति 1965 में की गई जो भारत सरकार ने एक ओर स्वास्थ्य सर्वेक्षण एवं योजना समिति या मुदालियर समिति के सामान्य नाम से जानी जाने वाली समिति नियुक्त की इसका उद्देश्य देश की पंचवर्षीय योजनाओ के सन्दर्भ में देश की स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं और संसाधनो पर नये सिरे से विचार करना और समिति के बाद स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई प्रगति का पुनरीक्षण करना था।

चिकित्सा विभाग मूलतः स्वास्थ्य वर्धन तथा स्वास्थ्य संरक्षण हेतु ही बनाया गया है ताकि विभिन्न चिकित्सकीय गतिविधियों में इस तरह में समन्वय किया जाए ताकि स्वास्थ्यता बनी रहे। अर्थात् आरोग्य ही चिकित्सा विभाग का ध्येय है।

समाज की व्यवस्थ को बनाए रखने हेतु उसकी प्रत्येक इकाई अर्थात् मनुष्य का विचलन रहित होना आवश्यक है और हम जानते है कि स्वास्थ्य शरीर में ही स्वस्थय मन निवास करता है। इस प्रकार समग्र समाज को यदि विचलन और विघटन से बचाना है तो आरोग्य का होना अत्यावश्यक है।

समाज एवं चिकित्सा विभाग के अन्त्संबधों पर दृश्टिपात करें तो ज्ञात होता है। कि समाज में स्वास्थ्य ही वह अवलम्ब है जिस समाज टिका हुआ है। स्वास्थ्य सेवाएँ समाज में अनेक प्रकार से अपनी भमिकाओं का निर्वाह करती है।

– स्वास्थ्य पर किया गया खर्च अंतोगत्वा गरीबी को बढ़ाता है। (विश्व विकास रिपोर्ट 2009) जिससे जीवन स्तर, जीवन प्रत्याशा दोनों घट जाते है। परिणामस्वरूप मानव विकास प्रभावित होता है।

– स्वस्थय व्यक्ति की कार्य कुशलता अधिक होती है। वह रोगी की बजाय अपनी भूमिकाओं को अधिक अच्छे तरीके से निभा सकता है। अतः समाज की व्यवस्था को बनाए रखने तथा सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति में वह अपना श्रेष्ठ योगदान देता है।

– स्वास्थ्य भारतीय दर्शन के अनुसार जीवन के सुखो में सर्वोपरि रखा गया है। अतः स्वास्थ्य धन की प्राप्ति सुखी जीवन का पर्याय है।

– विभिन्न प्रकार की बिमारियाँ तथा महामारियाँ समाज के समक्ष हमेशा चुनौती बनकर प्रस्तुत होती रही तथा समाज के सुरक्षा कवच के रूप में चिकित्सा विभाग ने सदैव अपने कृत्यों एवं दायित्वो का निष्ठापूर्ण पालन किया है। चिकित्सा विज्ञान के कतिपय दायित्व निम्नानुसार है।

1 विभिन्न बिमारियों एवं महामारियों केा फैलने से रोकने के समग्र प्रयास करना ।
2 स्वास्थ्य के प्रति जनजागृति पैदा करते हेतु विभिन्न संचार माध्यमों से प्रचार – प्रसार करना।
3 विभिन्न प्रकार के टीकाकरण करना ताकि प्राण घातक बिमारियों का उन्मूलन किया जा सके।
4 बिमारियों हेतु (प्रायः संक्रामक) अलग प्रकोष्ठ का निर्माण करना, निदानात्मक प्रावधान आदि करना ताकि बिमारी का उपचार किया जा सके, साथ ही उसे फैलने से रोका जा सकें। जैसे स्वाइन फलू
5 परिवार नियोजन जैसे महत्वपूर्ण कार्यो की पूर्ति में भी चिकित्सा विभाग अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। विभिन्न प्रकार के नारों का यथा बच्चे दो ही अच्छे, छोटा परिवार सुखी परिवार आदि प्रचार–प्रसार करता है, साथ ही गभी निरोधक गोतियाँ तथा निरोध मुफत में उपलब्ध करवाता है।[3]

राज्य स्वास्थ्य सेवा का संगठन :–

स्वास्थ्य सेवाओ के संगठन की संरचनाओ को अध्याय के इस भाग में जिले के स्वास्थ्य ढाँचे को स्पष्ट करने को प्रयास किया गया है।

स्वास्थ्य संचालनालय का प्रमुख, स्वास्थ्य सेवाओ क संचालक होता है। एवं सहयोग के लिए संयुक्त संचालको, उपसंचालको की टीम होती है। उप और सहायक संचालक दो प्रकार के हो सकते है। क्षेत्रीय और वृत्तिमूलक।[4]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अग्रवाल जे.के. (परिवार एवं समाज), नेशनल हाउस जबलपुर।

गर्वमेन्ट ऑफ इण्डिया (इण्डियन सिस्टम ऑफ मेडिसीन एण्ड होम्योपेथी इन इण्डिया) दिल्ली, 2001 –03।

कटारिया सुरेन्द्र (प्रशासनिक एवं प्रबन्ध), नेशनल पब्लिशिंग हाऊस जबलपुर एवं दिल्ली, 2000।

मुखर्जी रविन्द्रनाथ (सामाजिक शोध व सांख्यिकी), विवेक प्रकाशन, जवाहराल नगर दिल्ली, 1998।

म.प्र. शासन (लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग) म.प्र. 2007–08।

पार्क के. (प्रिवेन्टीव एवं सोशल मेडीसिन), सौहलवा संस्करण में. बनारसीदास भनोत पब्लिशर्स, प्रेमनगर जबलपुर, 2000।

पार्क के. (प्रिवेन्टीव एवं सोशल मेडीसिन), पंद्रहवा संस्करण में. बनारसीदास भनोत पब्लिशर्स, प्रेमनगर जबलपुर, 1999।

पार्क के. (सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग) में बनारसीदास भनोत, प्रेमनगर जबलपुर।

राय पारसनाथ (अनुसंधान परिचय), लक्ष्मीनारायण लाल अग्रवाल आगरा, 1989।